केंद्र बिंदु

नीरज नायडू

1

हाल ही में मेरा लिखा लेख एक प्रतिष्ठित पत्रिका में छपा | अजीब बात ये है कि मैं हमेशा से अपनी कोई कविता या कहानी छपते हुए देखना चाहता था पर इस लेख में ना तो कविता के रंग हैं ना ही कहानी के दाग | ये लेख तो गणितीय है | खासतौर से अंकगणित की खूबसूरती और गणित शिक्षण से जुड़े कुछ पहलुओं के बारे में है | इसे हर कोई पढ़ना नहीं चाहेगा | और पढ़ भी लेने पर सभी इसका रस नहीं पी पाएंगे | और पी भी लें तो शायद स्वाद कुछ ही को भाएगा |

पर फिर भी, कुछ तो छपा | शायद शब्दों का मोह छोड़ मुझे अब अंकों से दिल लगाना चाहिए | अंक झूठ नहीं कहते | शब्द तो कुछ होते है, उनके अर्थ कुछ और, उनके मायने कुछ और, और फिर किसी वाक्य में ढल कर कब धोखा दे दें ये किसे मालूम | अंक सीधे, साफ़, आपके सामने पूरी सच्चाई से बनाए हुए रास्ते पर चलने को तैयार बैठे रहते | वहीँ शब्द कभी उड़ जाएँ, कभी ज़मीन की गहराई में छुप जाएँ, और कभी आपको ही रास्ते से भटका दें, ये बहुत ज़ालिम है भाई | इनसे खेलने वाले तो जांबाज़ ही होते होंगे | चलो अंक ही सही | ज़रूरी नहीं की हमेशा हम ही खिलौना चुनें, कभी-कभी खिलौना भी हमें चुनता है | शायद कहानी-कविता मेरे बस की नहीं | गणित में ही कुछ छुपी प्रतिभा निकल आए |

पत्रिका के चिकने पन्ने पर अपने लेख का शीर्षक और उसके नीचे बड़े अक्षरों में अपना नाम पाकर मेरे अन्दर गुब्बारे उड़ने लगे | मैंने ये बात सबको बताई | जो मेरे आस-पास थे उन्हें पत्रिका भी दिखाई | यहाँ तक की सोशल मीडिया पर ये बात शेयर भी की | पता नहीं मैं ख़ुशी बाँटना चाह रहा था या दिखावा कर अपना भौकाल स्थापित करना चाह रहा था | कुछ लोगों ने मेरी वाह-वाही की, कुछ ने हौसला-अफ़ज़ाई | पर पढ़ा नहीं किसी ने |

छुट्टियों में घर आया तो अपने पिताजी को ये बात बताई और पत्रिका भी दिखाई | पिताजी ने देखता ही पूछा कि ये मैंने कहाँ से मार के लिखा है ? मतलब कहाँ से टाप लिया ? चोरी की ?

उनके शब्द हमेशा ही तीखे होते हैं | और तीखेपन के साथ उनके आँखों में एक हल्की सी मुस्कान होती है जो सामने वाले का मज़ाक उड़ा रही होती है | ऐसा लगता है उनके आँखें कह रही हो 'क्यूँ बे मुझे चूतिया समझा है क्या?' ये बिलकुल वैसा ही होता है जैसा काफ्का

ने 'पिता को पत्र' में लिखा है | काफ्का तुम अकेले नहीं हो | कुल मिला के कुछ अच्छा कर लो तो पिताजी को विश्वास दिलाना नामुमकिन है कि ये मैंने ही किया है | कि मैं अब बड़ा और काबिल बनने की कोशिश कर रहा हूँ | पर नहीं, उनके नज़रों में मैं कमज़ोर, बेवकूफ और चोर ही रहूंगा | वही छोटा बालक जो टेस्ट में अंडा लाने पर उन्हें कभी नहीं बताता और उनके हस्ताक्षर की नक़ल अपनी टेस्ट कापियों में कर टीचरों को झूठ बनाता | वही चोर जो उनके ऑफिस से स्केच पेन चुराता | वही गधा जो अपने सारे स्कूल के प्रोजेक्ट और चित्र वगैरह अपनी माँ से बनवाता | वही नालायक जो कुछ ठीक तो नहीं कर पाया, उलटा जो हाथ लगा वो खराब कर दिया | एक बार तो टी.वी. का रिमोट पकड़ कर बस एक बटन दबाया ही था कि टी.वी बंद पड़ गया | खूब डाँट पड़ी | मुझे आज तक नहीं समझ में आया आखिर टी.वी. खराब कैसे हुआ और मैं इसके लिए कैसे ज़िम्मेदार हूँ ?

पिताजी की टिप्पणी सुनकर मुझे एकदम से धक्का लगा । ये दुःख कि बात है कि मेरे खुद के पिताजी अपने बेटे की काबिलियत नहीं पहचानते | पता नहीं ये पिताजी लोगों का क्या पंगा है अपने बेटों से? कभी खुश ही नहीं होते है ये प्राणी | शायद एक लूज़र मानते हों मुझे | मेरे मन में क्या आया कि मैं मुस्कुरा दिया और मुड़कर वहाँ से चला गया | इन्हें कुछ भी बताना बेकार ही है |

माँ को भी दिखाया और एक हज़ार की राशि, जो लेख के छपने पर मुझे भेंट की गयी थी, का चेक भी दिखाया | मैंने तो लेख इसलिए लिखा था क्योंकि मेरे दिमाग में ये विचार घुमड़-घुमड़ घूम रहे थे और इनकी चिल्लाहट बहुत तेज थी | लिखना तो था ही | ऐसे या वैसे या जैसे | अब छपने के बाद अगर कुछ इनाम राशि भी मिल जाए तो क्या हर्ज़? चाय सिगरेट का खर्चा तो निकल जाएगा कम से कम दस दिन का | ऊपर से ये कोई कम बड़ी बात है क्या कि आप अपना पागलपन पन्नो पर उकेर दें और कोई उसके लिए आपको पैसे भी दे दे | लेकिन माँ ने तो मुँह सिकोड़ लिया । बोली बस इतना ही | हँह ! और फिर वो अपने काम में लग गयी | पूरे पाँच पन्नों का लेख है | अब इन्हें खुश करने के लिए पाँच सौ पन्नों की पुस्तक लिक्खूँ क्या ?

पर मुझे इतना सोचना नहीं चाहिए | इतना चिड़चिड़ा भी नहीं होना चाहिए | माँ और पिताजी दोनों को ही गणित में कोई रूचि नहीं, तो फिर ये लेख वे क्यों पढ़ें? और पढेंगे भी तो शायद इनके समझ में ना आए | सीधी सी बात है भाई, जब तक आपको कोई चीज़ समझ में नहीं आयेगी, आप उसकी प्रशंसा कैसे कर सकते हैं | गणित कोई प्यार तो है नहीं कि समझ में ना आए फिर भी अच्छा लगे |

और तो और, इस घर में तो साहित्य का एक तिनका भी ना मिले | कोई कुछ नहीं पढ़ता | मतलब ना उपन्यास, ना ही कविता, ना ही कहानियाँ | बस वह सड़ी हुई बदबूदार अखबार लेकर पिताजी बैठे रहते हैं सुबह चाय के साथ | मैं अखबार नहीं पढता इसलिए मुझे उनके नाम नहीं पता | सिर्फ इतना जानता हूँ कि घर पर दो अखबार आते हैं, एक सफ़ेद और एक हल्का भूरा | कभी गलती से अखबार हाथ लग भी जाए तो उसमें भी कहानी कविता ही ढूँढने लगता हूँ | वो रविवार को आज भी आधे पन्ने की कहानी कभी-कभार पढ़ लेता हूँ | वैसे भी अखबार पढ़ना पढ़ना नहीं होता बल्कि एक आदत होती है | ऐसे असाहित्यिक माहौल में मैं बड़ा हुआ हूँ | तो आज मैं इन लोगों से क्यूँ अपेक्षा लेकर बैठा हूँ कि वो मेरे लिखे हुए शब्दों से खुशियाँ समेटें? क्यूँ गुस्सा हो रहा हूँ? ये लोग क्यों इस पतली सी पत्रिका में कोई लेख देखकर खुश होंगे? इनके लिए तो बस ठोस, द्रव और गैस ही सच्चाई है ? इन्हें क्या पता कि परमाणु और उप-परमाणु की दुनिया भी कोई चीज़ होती है | बेचारे, काश थोड़ा पढ़ लिए होते तो समझ जाते इस दुनिया का ढांचा तो हवा, पानी, मिट्टी है और यही जीवन संभव बनाता है पर इस जीवन को जीवंत तो कहानियाँ बनाती है |

माँ ने चेक जल्दी बैंक में जमा करने के लिए कहा | मैंने हूँ करके अपनी पत्रिका को वापस अपने बस्ते में डाल दिया | यहाँ इसका कोई काम नहीं |

2

उस दिन चीनी घर आई थी | उसके माँ और पिता भी साथ थे |कुछ रिश्तेदार और उनके बच्चे भी आए | पूरा घर भर गया लोगों और उनकी बातों से | वैसे मुझे उनकी बातें सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है तो मैं अपना हेडफोन डाल गाने सुनने लगा | पर लगा कि ये बहुत असभ्य हो जाएगा | नामुनासिब | सो मैंने गाना बंद कर हेडफोन निकाल दिया और मेहमानों की ओर ऐसे देखने लगा जैसे कोई नाटक देख रहा हूँ | पुरुष वर्ग के कुछ लोग वित्तीय चर्चा में मशगूल थे | महिला वर्ग पालक पनीर बनाने में मग्न और चर्चा विशेष यह था कि अंत में साग का रंग हरा हो या भूरा या फिर जो कुछ भी हरा और भूरे के बीच में हो सकता है उन सारे रंगों का मिश्रण | कुछ पुरुष और महिला एक साथ बैठे आपस में ऐसी बाते कर रहे थे जिसका मैं वर्गीकरण नहीं पा रहा हूँ | जैसे एक पुरुष बोले, 'मैंने बचपन में सारे काम किए हैं, झाड़ू-पोछा किया है, बरतन धोए हैं, खाना तक बनाया है; सब सीख लिया छोटेपन में भई |' तो उसके प्रतिक्रियाफल सामने बैठी महिला, जो शायद उनकी पत्नी होंगी, बोली, 'तो बचपन का सीखा आज काम क्यूँ नहीं आ रहा है हाँ ?' वहाँ बैठी एक और महिला चिल्ला उठी, 'अगर भाई साहब सेंक दे तो मैं चार रोटी खाऊँगी |' इन बातों के भीतर लिंगों की लड़ाई मुझे साफ़ नज़र आ रही थी पर इन सब के लिए तो ये सिर्फ मज़ाक था | महिलाएँ आग्रह करने लगीं कि सारे पुरुष अब डाइनिंग टेबल पर आ जाएँ ताकि उन्हें खाना परोसा जा

सके | पितृसत्ता का सटीक उदाहरण आप यहाँ मेरे घर में अच्छी तरह से देख सकते | लेकिन महिलाएँ खुश ही नज़र आती है | आखिर ये लोग गुस्से में क्यों नहीं है ? काश कि मेरी माँ किसी दिन एक कढ़ाई मेरे बाप के सर पर जोर से दे मारे और चिल्लका कर कहे, 'ले खा', काश कि सारी महिलाएँ थालियों पर खाना परोसना छोड़ इस थाली से अपने-अपने मर्दों का मुँह तोड़ दे | एक पल के लिए तो गुस्सा होकर कुछ हिंसात्मक करें| माना कि ये कोई अच्छा तरीका नहीं है और ये सब करने से थोड़ी ना पितृसत्ता ख़त्म होगी | पर फिर भी ये दृश्य देखना मेरा सपना है | मेरी दिली तमन्ना है कि मैं अपने आँखों से मेरी माँ को मेरे बाप को कूटते हुए देखूँ |मन करे को मुझे भी रगड़ दें |

मानना पड़ेगा इन लोगों को | इतनी बात करते हैं ये और इन सारी बातों में एक भी किसी मतलब की नहीं होती | अरे बेमतलब की बात भी हो तो कम से कम कुछ आनंद आए सुनकर | पर इन लोगों का जवाब नहीं | साहित्य, कवितायेँ, कहानियों की चर्चा तो भूल के भी नहीं हो सकती इस घर में | पता नहीं ये लोग स्कूल क्या करने गए थे ? चलो विज्ञान की बात कर लो या गणित की | पर नहीं ये सब भी इन्हें नहीं आता समझ में | अच्छा चलो देश की बात कर लो, समाज की, समाज शास्त्र की, दर्शन की, कम से कम किसी महान व्यक्ति की बारे में, अरे गांधी के बारे में दो शब्द तो कह दो कृपा करके | पर नहीं, इनकी बात होगी कि मुन्नू आज बुलेट चलाते हुए कितना बढ़िया लग रहा था, हाँ उसकी हाईट अच्छी है, अरे ये घड़ी उसकी कलाई पर कितनी प्यारी लगती है, अरे कीया का चेहरा कितना गोलू मोलू है, कितनी गोरी है मेरी बेटी, शान्ति तुम योग करना क्यों शुरू नहीं कर देती सारी बीमारियाँ गुल हो जाएंगी, अरे भाईसाहब आपके बाल बहुत झड़ गए इतनी जल्दी लगता है पानी का असर है, इस साल सोना कितना महंगा हो गया है ना करुणा पर फिर भी हमने ये अंगूठी बनवाई है और वगैरह-वगैरह |

इन सब बातों को सुनकर मैं चुप सा रह जाता हूँ | लोग मुझसे पूछते हैं तुम इतना गुमसुम, चुपचाप क्यों रहते हो भाई? दांत जबड़े में कोई तकलीफ है क्या ? मैं कोई उत्तर नहीं देता हूँ | मुझे जवाब देना ही नहीं है| ये लोग तो बड़े हैं, इन्हें समझ क्यों नहीं आता ? बड़ों से लाख बेहतर छोटे हैं जो फट से कुछ भी समझ जाते हैं | सो मैं इनके साथ रहना ही पसंद करता हूँ |

चीनी मुझसे काफी छोटी है, करीब 15 साल | आजकल उसका मुँह हमेशा फूला रहता है | चेहरे पर चौबीस घंटे बिना बात के गुस्सा | मेरी समझ में आता है ये | सब उम्र का खेल है | लेकिन कुछ और भी है जो आग में घी का काम कर रहा है | गुस्सा तो ठीक है पर ये उखड़ी-उखड़ी क्यूँ है?

चीनी और मैं बहुत ज्यादा तो बात नहीं करते पर जब मिलते हैं तो कुछ शब्दों की अदला-बदली कर ही लेते हैं | मैं चीनी से थोड़ा सा निराश भी था | मैंने उसे कुछ महीने पहले कुछ किताबें पढने के लिए दी थी | ऐनी फ्रैंक की डायरी और रस्किन बांड की कहानियों का संकलन | पूछने पर पता चला दोनों ही किताबें उसे बहुत बोरिंग लगी इसलिए उसने नहीं पढ़ी | जब कोई किताबें नहीं पढता है तो मेरे अन्दर आग लग जाती है | ये कैसे हो सकता है कि कोई ना पढ़े ? ये तो इतना स्वाभाविक होना चाहिए जितना पलक झपकना | वैसे उसकी उम्र के हिसाब से दोनों ही किताबें बिलकुल उपयुक्त हैं और पढ़ने से ही तो कोई किताब पसंद आती है | पहले पन्ने पर ही पुस्तक बोरिंग है ऐसा कह देना बिलकुल गलत है | किताब पढ़ना दोस्ती की तरह है जो समय लेती है और गहरी होती जाती है | अब चीनी को ये कैसे समझाऊँ | काश मैं उसका टीचर होता तो उसे एक चुटकी में समझा देता | अभी मेरे पास उसे कुछ समझाने-वमझाने का ना तो हक है ना ही वैसा रिश्ता |

वैसे चीनी को पुस्तकें पसंद नहीं आने के कई कारण हो सकते हैं | किताबों का अंग्रेजी भाषा में होना, कहानियों का पारिवेशिक ढांचा अलग होना, किताबों का मोटा होना, पढ़ने में अरुचि, पढ़ने का माहौल ना मिल पाना, प्रेरणा का आभाव, या फिर शायद चीनी की पसंद कुछ और ही हो | अगली बार कॉमिक्स देकर देखूंगा |

खैर इस बात को कोने कर हम मेरे मोबाइल पर 2048 गेम खेलने लगे | चीनी अपनी उंगलियाँ स्क्रीन पर तेज़ी से चलाने लगी ताकि वो संख्याओं को जोड़कर बड़ी संख्याएँ बना सके | इतने में उसके पिताजी आए | उन्होंने स्क्रीन पर नज़र डाली | शायद उन्हें पता चल गया होगा कि ये कोई बकवास गेम नहीं बल्कि दिमागी गेम है | उन्होंने चीनी से तीखे स्वर में पूछा, 'कुछ सोच के कर रही है या ऐसे ही उंगलियाँ नचा रही है?'

मुझे ये सुनकर बहुत बुरा लगा | अपने माँ-बाप की याद आ गयी | चीनी के अन्दर की चीनी के तो टुकड़े-टुकड़े हो गए होंगे | चीनी ने कोई जवाब नहीं दिया | मैं समझ गया उसे बुरा लगा | वो अपना खेल ख़तम कर, फिर से गुस्से से एक कोने मैं बैठ गयी |

आखिर ये लोग अपने बच्चों को इतना नाकाबिल क्यों समझते हैं? और ऐसा समझते भी हैं तो मुँह में मिर्ची रखकर क्यों बात करते हैं?

साला यहाँ हम सब की कहानी एक जैसी है |

3

उस रात मेरे पेट नें अजीब सी आवाज़ लगाई | नहीं, पालक पनीर की वजह से नहीं | ऐसा तब होता है जब कोई कविता निकल रही होती है | मैंने झट से कलम कापी निकाल ली |

पर कुछ नहीं निकला | ये वैसे ही है जैसे छींक आते आते रह जाती है, नहीं आती है| लेकिन मैं भी जानता हूँ जब उलटी अपने आप नहीं आती है तो ऊँगली गले में डाल भी निकाली जा सकती है|

अंडा, घंटा, गोल चक्कर
जहाँ शुरू वहीं ख़तम
मेरी कविता

बस इतना ही | सही में ये कविता नहीं हो सकती | ये उलटी ही है | कविता दिन प्रतिदिन उस लड़की की तरह क्यों होती जा रही है जो कभी मेरी नहीं हो सकती ? गुस्से में मैंने कलम फेंक दी | क्या गणित ही मेरा भविष्य है ? पर मैं इतना भी तेज़ नहीं की गणितज्ञ बन जाऊँ, कोई महत्वपूर्ण खोज कर लूँ और इस दुनिया को छेद डालूँ |

खैर ये 'गोला' का किस पंडित नें नामकरण कर इसका नाम 'वृत्त' कर दिया? सो मैंने सोचा कि अगला लेख मेरा वृत्त पर होगा | कविता तो गोल हो गयी है | अब वृत्त ही साथ दे दे | प्रश्न ये है कि हम कैसे पता लगा सकते हैं कि किसी वृत्त का केंद्र कहाँ है ? और कितने अलग-अलग तरीके से ये पता लगा सकते हैं ? पेंसिल और परकार की मदद से मैंने कई सारे अलग-अलग त्रिज्या के वृत्त खींच लिए | हालांकि मैंने तो केंद्र पर ही परकार की नोक रखकर वृत्त खीचें इसलिए केंद्र बिंदु साफ़-साफ़ नज़र आ रही थी | लेकिन किसी वृत्त का केंद्र किधर है कैसे पता चलेगा ये मैं सोचने लगा | ज्यामिती के नियम लगाने लगा | थोड़ी देर में दिमाग खराब हो गया और मैंने पेंसिल भी गुस्से में फेंक दी | आखिर इस सब का क्या अर्थ है ? वृत्त का केंद्र उसके अन्दर ही होगा ना ? अब कहाँ है ये खुदा जाने | कहीं गणित भी धोखा ना दे दे | फिर तो कुछ नहीं बचेगा |

मैं मंटो की कहानी निकाल पढ़ने लगा | जब भी मुझे हताशा महसूस होती है मैं मंटो की कोई कहानी पढ़ डालता हूँ | कहानी पढ़कर मुझे ये लगता है कि मेरी ज़िन्दगी कितनी सरल और सुरक्षित है | सब कुछ तो है यहाँ | 'खोल दो' पढ़कर तो मेरा खून ही सूख गया था | 'टोबा टेक सिंह' तो कई बार ज़ोर-ज़ोर से बोल कर पढ़ा, पगलाया, बहुत रोया | ऐसा दर्द मेरी ज़िन्दगी में कहाँ? सब कुछ ठीक ही है | जैसे छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है बिलकुल वैसे ही छोटे दुःख को बड़ा दुःख खा जाता है |

इतने में मोबाइल बज उठा | इनाया के बिना तो मर ही जाऊँ | कविता आए ना आए, इनाया का कॉल ज़रूर आना चाहिए | हम लम्बी दूरी वाले सम्बन्ध में हैं | ज़बरदस्त चूतियाप है वैसे ये | मतलब विद्युत् चुम्बकीय विकिरण, माइक्रोवेव और रेडियो तरंगों पर हमारा सम्बन्ध निर्भर है पूरी तरह से | प्यार ना हुआ फिजिक्स लैब का कोई प्रयोग हो जैसे | वैसे प्यार

बोलना शायद थोड़ा ज्यादा हो गया | एक ही बिस्तर पर साथ सोना प्यार का प्रमाण तो नहीं | अजीब रिश्ता है हमारा | जितना समय हमने हाथ से हाथ मिलाया हो उससे दस गुना ज्यादा हमने होंठ से होंठ मिला लिया होगा | रोमांटिक बिलकुल भी नहीं हैं हम | हाँ, इरोटिक बहुत हैं | पर अब दूर हैं एक दूसरे से | तो बातें होती है अब | बात करना दलदल में पाँव पटकने जैसा होना चाहिए | बस फँसते जाओ, गहराई में डूबते जाओ | लेकिन यहाँ तो मैं कांक्रीट में कूद रहा हूँ | दो तीन मिनट से ज्यादा बात बढ़ ही नहीं पाती है | क्या हम सिर्फ एक दूसरे को चूम के नहीं जी सकते ? ये बात करना क्यों ज़रूरी है ?

इनाया को भी एक किताब दी थी मैंने | गेब्रियल गार्सिया की 'लव इन द टाईम ऑफ़ कॉलेरा' | नहीं पढ़ी उसने | फिर आग लग गयी मेरे अन्दर | लगा भाग जाऊँ उसे छोड़कर | पर उसकी शारीरिक आकार-आकृतियों पर बनते कोणों ने मुझे रोक लिया | वासना बहुत से तार्किक और समझदारी से सोचे गए निर्णय को मिट्टी में मिला देता है | इनाया सिर्फ फेसबुक के स्टेटस पढ़ती है | वाट्सएप पर भेजे गए सन्देश पढ़ती है | पर किताब खोलते ही उसे काँटा चुभने लगता है | मैंने सोचा ठीक है, पढ़ना नहीं है उसे तो कम से कम सुन तो सकती है | लेकर गया कॉल की 'प्रेम कबूतर' और पढ़ने लगा | कुछ वाक्य ही पूरे किये होंगे कि उसने मेरे होंठों को चूमते हुए जोर से काट लिया | अब मैं कोई शायरी तो कह नहीं रहा था ही एक-एक लफ्ज़ चाशनी सा टपके मेरे होठों से | इनाया बोली कि जब शब्दों के उच्चारण करते वक़्त मेरे होंठ हिलते हैं तो वे उसे बहुत उत्तेजित करते है | अब क्या ? फिर मैं और इनाया सांप बनकर एक दूसरे से लिपट गए और कहानी धरी की धरी रह गयी | मैं क्या जवाब दूंगा लेखक को ? कैसे कहूँगा कि, मैं, जो कविता-कहानी करना चाहता था उसके लिए कहानी से बढ़कर सेक्स हो गया है | श्राप लागेगा मुझको | कभी कोई कहानी नहीं लिख पाऊंगा | पर इनाया का शरीर भी तो एक कहानी है | उसका हर अंग एक अध्याय |

फैज़, इनाया फैज़ को नहीं जानती | अल्लमा इक़बाल ? वो भी नहीं | अच्छा घर वाले तो जानते होंगे ? पता नहीं ? ये रिश्ता भी असाहित्यिक सा ही रह गया | हम खाना खाने जब भी गए चुप चाप खाना ही खाते | कमरे में रहते तो एक दूसरे में दूध और पानी की तरह घुल जाते | अब दूर हैं तो ये दोनों ही मुमकिन नहीं है | अब बातों पर सबकुछ कायम है पर बातें तो चिड़िया बन उड़ गयी हैं | क्या होगा पता नहीं |

4

ये रेलवे स्टेशनों पर जो किताब की दुकानें होती है वहाँ कुछ लेखकों की किताबें ही बहुतायत में क्यों मिलती है ? अगाथा क्रिस्टी की किताबें लाइन से खड़ी रहेंगी, पाउलो कोइल्हो का ढेर होगा, हिंदी में प्रेमचंद ही प्रेमचंद चमकेंगे ध्रुव तारे की तरह, और कविता की किताबें तो पता

नहीं कहाँ दबी हुई रहती है, अगर गलती से ढूँढने बैठे तो ट्रेन ही छूट जाएगी | सच्ची बात कहूँ तो मैं एक बार व्हीलर की दूकान पर कविताएँ ढूँढने लगा और खोज निकाली बेशकीमती अमृता प्रीतम | आह! क्या उत्तेजना ! अमृता के शब्द मुझे तपा देते हैं | साँसों को छूने की बात करती हैं ये तो | और इस गर्माहट में मेरी ट्रेन ने कब प्लेटफार्म छोड़ दिया पता ही नहीं चला | लेकिन इस बात का मुझे कोई दुःख नहीं हैं | बिसरिया जी की याद आ गयी | खैर ये तो सत्य है कि अब कविता एक खोज हो गयी है | आसानी से कान पर नहीं पड़ती | पर हाँ बनारस स्टेशन पर मुझे अच्छा साहित्य मिला था | काशीनाथ सिंह, धर्मवीर भारती, श्रीलाल शुक्ल, शिवानी, इस्मत, मन्नू, मंटो, निराला, और क्या क्या नहीं था वहाँ | लगा डाका डाल दूँ |

स्टेशनों और ट्रेनों पर बहुत से चेहरे किताबों के पीछे देखता हूँ तो अच्छा लगता है| तिरछी निगाहों से किताब का शीर्षक पढ़ने की कोशिश भरपूर करता हूँ | या कम से कम एक झलक लेखक-लेखिका के नाम पर पड़ जाए बस | मुझे याद है मैं छुट्टियों के बाद कॉलेज लौट रहा था | ट्रेन में मेरे पढ़ने की गति दुगुनी हो जाती है और मैं स्टीव टोल्ट्ज़ की ‘अ फ्रैक्शन ऑफ़ द होल’ पढ़ रहा था | सोचिये गुदगुदी से मरना कैसा होता होगा ? वैसी गुदगुदाने वाली पुस्तक है | किसी स्टेशन पर ट्रेन रुकी | एक परिवार अपना साजो-सामान लिए चढ़ा और मेरी सीट के आजू-बाजू हरकत करने लगा | एक बेहद खूबसूरत लड़की जो केसरिया रंग का सलवार-कमीज़ पहने हुई थी मेरे बगल में आकर बैठ गयी | हर लौंडे की ज़िन्दगी में वो एक दिन आता है जब सफ़र के दौरान एक बिजली सी लड़की उसके बगल में आकर बैठती है | उसके माँ-पिता और छोटी बहन भी साथ थे | पंद्रह मिनट तक पेटी, बैग, झोला जमाने का कार्यक्रम चलता रहा | मेरी पढ़ने की गति पर इसका गहरा दुष्प्रभाव पड़ा | अंकल जी ऐसे जोर-जोर से कह रहे थे कि इक्चालीस, तिरालीस, चँवालीस, पैंतालीस उनका है जैसे अपनी राजगद्दी पर हक जता रहे हों | ये सब मैं अपना चेहरा किताब में घुसाया हुआ पर नज़रें टेढ़ी कर देख रहा था | इतने में वह बेहद खूबसूरत लड़की, जो शायद सोलह-सत्रह की रही होगी, मेरी ओर सरकी और मेरी आँखों में अपनी आँखें सुई की तरह गड़ा कर पूछी कि मैं कौनसी किताब पढ़ रहा हूँ | उसकी माँ तो ये सुनकर बुर्का के अन्दर से झाँकने लगी | अंकल जी एकटक इधर ताड़ने लगे | छोटी बहन भी पूरी अपनी अम्मी जैसी | ऐसे देखने लगी जैसे ये सब मेरी गलती है | जैसे इस दुनिया में जो कुछ भी गलत हो रहा है उस सब का ज़िम्मेदार मैं हूँ | लेकिन जब आप किसी राजकुमारी की आँखों में देखते हैं तो आप सिर्फ देखते नहीं हैं | आप उसमे कैद हो जाते हैं | और फिर ये सारी दुनिया व्यर्थ लगती है | मैंने धीरे से किताब का नाम उसे बताया | सबको लगा बस अब बात ख़तम | लेकिन मैंने प्रधानमंत्री का नाम थोड़ी ही बताया था कि बात ख़तम | उसने फिर पूछा ये किताब कैसी है

? बापरे कोई ये सवाल कर ले तो मेरी मौत आ जाए | एक झटके में कैसे बता दूँ कि कैसी है ? अच्छा, बुरा, नहीं ये सब किताब में नहीं होता | किताब तो हम इंसानों जैसे हैं, क्या अच्छा, क्या बुरा, कौन बता सकता है ? किसी के लिए कोई चोर है तो किसी के लिए भगवान् | मैं बस इतना कह पाया कि अलग है, मतलब पहले ऐसा साहित्य नहीं पढ़ा | शायद वो मुझसे सरल उत्तर की अपेक्षा कर रही थी | आर पार की बात सुननी चाह रही थी | मन किया उससे कहूँ कि आर और पार के बीच ही ये जीवन का अस्तित्व है | लेकिन मैंने ऐसी कोई बेवकूफी नहीं की और किताब ही उसे दे दी | खुद ही जाने समझे | उसने किताब को टटोलते हुए कुछ पढ़ा और फिर हँसते हुए मुझे वापस कर दी | मैं भी मुस्कुरा दिया | देख रहे हैं किताब में कितनी ताकत होती है | मैंने हिम्मत कर पूछा, 'तुम् किताबें पढ़ती हो ?' उसने सर दाएँ-बाएँ हिला दिया | 'पढ़ना चाहती हो ?' मैं उसे रस्किन बांड की 'द ब्लू अम्ब्रेला' देने लगा| इसका पतला और छोटा आकार सबको भाता है | उसकी छोटी बहन अब ऐसे देखने लगी जैसे नियमानुसार मुझे उसे भी कुछ देना चाहिए | मगर लड़की नें किताब नहीं ली | पता नहीं क्यों ? शायद कुछ लोग शब्दों के कुँए में कूदने से डरते हैं | या शायद उन्हें कोई ऐसा मिलता ही नहीं जो उन्हें पीछे से धक्का दे | सो मैंने ये नन्ही सी किताब उसकी छोटी बहन को दे दी | वो तो ऐसे पन्ने पलट पलट कर देखने लगी जैसे पहाड़ी के शिखर पर पहुँच कर कोई पर्वतारोही चारो तरफ घूम घूम कर नज़ारा बार बार देखता है | किताब में चित्र भी थे | वही देख रही होगी | इतने में टी.टी. साहब आ गए और टिकट-टिकट चिल्लाने लगे | मैंने एक बार अच्छे से उस लड़की की ओर देखा, उसके शरीर को देखा जो पूरी तरह कपड़ों से ढँका हुआ था पर ये कोई जादू नहीं कि सिक्के पर रुमाल रख दिया तो सिक्का गायब | मेरा बहुत तेज़ मन किया उसे एक कहानी सुनाऊँ | और मेरी कोई इच्छा नहीं थी|

5

'बर्बादी, हम बर्बादी की ओर बढ़ रहें हैं भाई | मज़े की बात ये है की हर कोई बेखबर है | इन्हें लग रहा है सब ठीक है | ये लोग खुश कैसे हैं यार ? भ्रम, भ्रम,' मैं बड़बड़ा रहा था कि साहिर ने टोक दिया |

'चाय पी,' साहिर बोला |

'चाय पीने से सब ठीक हो जाएगा क्या ?' मैंने चीखा | हालांकि अगर कल से इस दुनिया में सब चाय पीना बंद कर दें तो बड़ा नुक्सान होगा | मालिक-सेठ लोगों का तो ठीक है लेकिन चाय बगान के मजदूर क्या करेंगे ? ये बुढ़िया जो हमें चाय पिला रही है, ये क्या करेगी ? ठीक ही कहता है साहिर, चाय पीने से कुछ तो ठीक रहेगा |

‘चाय पीने से क्या होगा बे |’ मैंने पूछा | मुझे साहिर के मन की शांति, उसकी स्थिरता देखकर बड़ा गुस्सा आता है | ये इसकी काबिलियत है या फिर ये भी बेखबर है?

‘तो सिगरेट पी | काकी इसे एक छोटी गोल्डफ्लेक दे दो |’ उसने काकी की ओर देखकर मुझसे कहा |

मैंने सिगरेट जला ली | सिगरेट जलते ही मेरा मन बुझ जाता है | मैं साहिर बन जाता हूँ | स्थिर और शांत | इस दुनिया को छोड़ किसी समान्तर ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर जाता हूँ | मेरी सारी चिड़चिड़ी बातें धुँआ बन उड़ जाती है |

पर मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानने वाला | मुझे साहिर को यकीन दिलाना होगा कि इस दुनिया में गड़बड़ है | मैंने साहिर को ऑरवेल की ‘1984’ दी और कहा इसे जितनी जल्दी हो सके पढ़ ले ताकि इस अँधेरी दुनिया की साजिशें जान ले |

‘लेकिन ये तो बस एक कहानी है | मनगढ़ंत | कुछ भी बकवास लिख दो |’ साहिर अपनी ठंडी आँखें मेरी तरफ कर बोला |

मेरा खून खौल गया |

‘सिर्फ कहानियाँ ही सच है साहिर | और ये सच जो तुम अपनी आँखों से देख रहे हो, झूठ है |’ मैंने डायलॉग मार दिया और किताब रखकर चला गया | ऑरवेल के खिलाफ कोई एक शब्द बोल दे तो उसकी जीभ में परकार की नोंक घुसा दूँ | ऑरवेल क्या किसी भी लेखक के लिए कोई दो शब्द गलत बोल दे फिर देखें मेरा रौद्र रूप | सालों को क्या पता लिखना क्या होता है | प्रश्न-उत्तर, पत्र, निबंध रटकर लिखें है ज़िन्दगी भर और बड़े आये | चार लाइन लिखने में हग देंगे |

दो दिन बाद गुस्सा शांत हुआ तो मैं साहिर के कमरे में गया | उस किताब के अन्दर का बुकमार्क अपनी जगह बदल चुका था | चौथे पन्ने पर था | साहिर मेरा पक्का दोस्त है | उसने पढ़ना शुरू किया होगा |

करीब एक महीने बाद मैं अपनी किताब वापस मांगने गया | बुकमार्क अभी भी चौथे पन्ने पर था |

‘सॉरी यार, मुझसे ये किताब-विताब नहीं पढ़ी जाती |’ साहिर नज़र झुकाकर, एक हलकी मुस्कान लिए बोला, ‘इसपर फिल्म बनी है क्या ?’ उसने पूछा |

घंटा पक्का दोस्त | ये मेरा दोस्त नहीं हो सकता | मैं अपनी किताब लेकर भाग गया |

लेकिन अपने कमरे में अकेले बैठकर मैंने महसूस किया कि साहिल ठीक ही है | कम से कम उसने साफ़ साफ़ बता दिया उसे नहीं पढ़ना | कम से कम वो उन लोगों में से तो नहीं हैं जो सिर्फ पढ़ने का दिखावा करते हैं, या सिर्फ पन्ने पलटते हैं और शब्दों की गहराई नापने से तौबा कर लेते हैं, या वो विश्लेषणात्मक लोग जो किताब के साथ सोचा-समझा सौदा करते हैं, अपनी भाषा पर पकड़ बनाने के लिए पढ़ते है या फिर ज्ञान अर्जित करने के लिए, इन लोगों के दिमाग पहले से ही भरें हैं, इन्हें पता है इन्हें क्या चाहिए, ये तो धंधे वाले हैं, ईस्ट इंडिया कंपनी हैं | साहिर ऐसा नहीं हो सकता | या तो वो पढ़ेगा या नहीं पढ़ेगा | फिलहाल तो वो पढ़ने से रहा ।

अगले दिन मैं और साहिर काकी की दुकान पर फिर से सुट्टा मार रहे थे चाय के साथ | सब कुछ पहले जैसा | पढ़ने वाले और नहीं पढ़ने वाले दोस्त तो हो ही सकते हैं | जैसे हम सब अलग होते हुए भी एक साथ सामंजस्य से, शान्ति से जी सकते हैं |

मैंने अपनी एक किताब के बीच में दबा एक पन्ना निकाला | वत्सला पाण्डेय की कविता 'एक प्याली चाय' प्रिंट कर लाया था । काकी से पूछा, ये उनकी दुकान की दीवार पर, यहाँ सामने की तरफ, लगा दूँ, तो उन्होंने कहा जो करना है कर, मरना है तो मर | सो मैंने छिपका दिया और उन्हें बिना बताये अपनी किताब के बीच में दबा एक और पन्ना निकाला जिसपर अमृता की कविता 'सिगरेट' प्रिंट करवा लाया था, वो भी साथ चिपका दी | कोई चाय का प्यासा कभी तो पढ़ेगा | कोई सुट्टे की तलब में यहाँ दौड़ कर आएगा और अमृता की कविता पढ़ अपनी तलब ही शायद भूल जाएगा |

क्यूँ ना ऐसा किया जाए, कविताओं के लाखों-करोडो प्रिंट लेकर सारे शहर में जगह-जगह चस्पा कर दिया जाए | सारा शहर एक साथ कविता पढ़ते कितना सुन्दर लगेगा | माना मैं कविता नहीं लिख सकता लेकिन कवि-कवयित्रियों के लिए इतना तो कर ही सकता हूँ |

कुछ दिन बाद ये बात मैंने साहिर को बताई | उसकी गर्लफ्रेंड रौशनी, जिसे ख़ास तौर से पाश की कविताएँ बहुत पसंद हैं, भी वहीँ थी सो उसे भी बताया | रौशनी को तो इस गतिविधि में मेरा सहयोगी बन जाना चाहिए | वो अंग्रेजी में कहते हैं ना पार्टनर इन क्राईम | सारा शहर रंगना है कविताओं से, अकेले कैसे कर पाउंगा | पूरी मिलिट्री लगेगी कविता प्रेमियों की |

'पागल है क्या?' साहिर ने झट से मुझे कहा | वैसे तो ये प्रश्नवाचक वाक्य होना चाहिए पर आमतौर पर इसे घोषणात्मक वाक्य की तरह प्रयोग किया जाता है । मुझे साहिर से ऐसे ही शब्दों की अपेक्षा थी | किसने इसका नाम साहिर रख दिया यार ? धब्बा साला !

‘मैं अब विदा लेता हूँ,’ मैंने रौशनी से कहा | वो समझ गयी और हँसकर मुझे बड़ी अदब से देखकर सर हिलाया | साहिर को हवा भी नहीं लगी क्या हुआ | चूतिया |

6

आखिर मिल गयी वो जिसकी मुझे तलाश थी | काला कपड़ा पहने, एक मोटा फीता अपनी कमर पर कसे हुए ये किसी तूफानी बादल से कम ना लग रही थी | सिल्विया, उसका नाम सिल्विया है | सिल्विया बोलते जब दांत होंठों पर रगड़ते हैं तो मैं उत्तेजित हो उठता हूँ | क्या खतरा नाम है |

वैसे तो हमारी मुलाक़ात बचपन में ही हो गयी थी पर उसने अपना नाम नहीं बताया था | हमारी कभी-कभार बातचीत भी होती थी पर उस बातचीत के बीच बहुत लंबा सन्नाटा होता था इसलिए हम कभी एक दूसरे को जान नहीं सके, करीब नहीं आ पाए |

पर अब सिल्विया लौट आई है |

मैंने उसे काला रंग दिया | उसने रात में अपनी नाखूनों पर लगाया | उफ़ ये काला रंग जैसे इसके लिए ही बना है |

इस काली रात में ये जंगल कितने काले लगते हैं
डर लगता है
सो मैं गाना गाते इन्हें पार करता हूँ
मेरे साथ झींगुर, मेंढक भी गाते
टहनियों पर लटके पत्ते भी गाते
दूर कुत्ते भी गाते
लेकिन इन सबको किस बात का डर
इन्हें कौनसा जंगल पार करना है
खैर मैंने तो जंगल पार कर लिया
काला जंगल
जो कल सुबह फिर चमकेगा
जो कुछ भी जीवित है उसका पर्यायवाची बनेगा
पर मैं इसे दूर से ही देखूंगा
पार तो मैं इसे रात में ही करूँगा
झींगुर, मेंढक, पत्तों और कुत्तों के संग
अपना गीत गाता रहूँगा

ये क्या? सिल्विया की एक नज़र पड़ते ही मेरे अन्दर से एक कविता छलक पड़ी |

छलकने से याद आया वो थप्पड़ जो सपना मैडम ने जड़ दिया था गाल पर | दांत टूटकर छलक आया था बाहर | वैसे तो मैं हर मैडम सर से मार खाता पर इनका थप्पड़ याद रह गया | बात बस इतनी थी कि मुझे कबीर के दोहे याद नहीं थे | मेरे साथ बैठा पदौड़ा संदीप टाएँ-टाएँ बक दिया | ना कोई लय, ना कोई एहसास और ना ही कोई समझ | रट्टू कहींका | मगर सपना मैडम को कौनसा इन बारीकियों से मतलब था | अब मुझे कबीर के दोहे याद ही नहीं तो इसमें गलत क्या है ? कविता कौन याद करता है ? और वैसे भी कबीर मेरे लिए कविता नहीं बल्कि कोई पहेली है | इतने कम शब्दों में इतना कुछ कह जाना | ना बाबा, ये मेरी समझ से बाहर की चीज़ है | कुछ ज्यादा ही ज्ञान छुपा है इसमें | और मैं ज्ञान की तलाश में नही हूँ | अब दोहे याद नहीं थे तो खाओ थप्पड़ | लेकिन थप्पड़ खाने पर भी कबीर ने मेरे दिल में कोई जगह नहीं बनाई | ऊपर से सपना मैडम ने मेरी डेस्क के नीचे छुपी हुई ग्रिम ब्रदर्स की परी कथाओ की पुस्तक देख ली |

मेरा बाँया कान खूब जोर से खींचते हुए बोली, “तो आप कविता नहीं कहानी में रुचि रखते हैं? क्या है ये?” ये कहते कहते उन्होंने मेरे पीठ पर जम के धूंसा मार दिया | सही कहा है किसी ने, फूल और पत्थर में फर्क छू कर ही पता लगाया जा सकता है |

मेरा मन किया उन्हें स्पष्ट कह दूँ कि ये काल्पनिक फेरी टेल्स की किताब है जो बहुत ही लोकप्रीय है पर डर के मारे कुछ नहीं कह पाया और सर झुकाया, गाल पर लाल निशान लिए खड़ा रहा |

इनका नाम सपना तो होना ही नहीं चाहिए | इतनी दुष्ट कि सबके सपने ही ख़तम कर दे | या शायद ठीक ही है क्योंकि मेरे सपनों में कई बार इन्होने मुझे डराया है, तीस सेंटीमीटर की उस पीली वाली स्केल से मुझे बकरे के मांस की तरह टुकड़ों में काटा है |

लंच टाइम में उस दिन मैंने अपना टिफिन नहीं खोला | कबीर के दो दोहे सटासट याद कर डाला | पदौड़े संदीप ने मुझे सिखाया कैसे ध्वनियों को ध्यान में रखकर कुछ भी याद किया जा सकता है | ये वैसा ही है जैसे गाने आसानी से याद हो जाते हैं | पदौड़ा संदीप इतना भी पदौड़ा नहीं था | मैं किसी भी चीज़ के लिए लात खा सकता हूँ लेकिन कविता के लिए बिलकुल नहीं | और ग्रिम की किताब तो मैं सपना मैडम की वजह से ही लाया था |

मैं दौड़ा-दौड़ा स्टाफ रूम के अन्दर घुस गया और सपना मैडम के सामने जाकर झटपट ऊँचे स्वर में दोनों दोहे कह दिया | सपना मैडम पलक झपकना भूल गयी |

उन्होंने गुस्से से कहा, 'दोहे रटकर बोलने से कुछ नहीं होता | तुम्हे पता भी है तुमने कितनी बड़ी बात कह दी दस सेकंड में ?'

'लेकिन पदौड़ा संदीप, मेरा मतलब संदीप भी तो ऐसे ही चिल्ला चिल्ला कर बोल जाता है,' मैंने कहा |

'पर तुम संदीप नहीं हो,' उन्होंने प्यार से कहा, 'और तुम्हारा ध्यान तो उस दूसरी किताब पर था, उसका क्या ?'

'वो तो मैं आपसे ही सुनने के लिए लाया था | आपकी आवाज़ में कहानी अलग लगती है,' मैंने कहा | कहानी पढ़ना और सुनना अलग किस्म के अनुभव हैं | जैसे आम काट कर खाना और चूस कर खाना कुल मिलाकर आम खाने की ही बात है पर फिर भी दोनों अनुभव बेहद अलग हैं |

सपना मैडम कुछ नहीं बोलीं | उनकी आँखें नम हो गयी | उन्होंने अपने आँसू रोक लिए होंगे | काश मैं उनके आँसू छलकते देख पाता | मेरे गाल पर हाथ रखकर उन्होंने पूछा, 'कौनसी कहानी ? मेंढक राजकुमार ?'

मैं मुस्कुराता हुआ, किताब वहीँ छोड़ कर, भाग गया | इतना काफी था | एक टीचर का अच्छा रूप मैं नहीं देख सकता | ये तो हमेशा मेरे लिए शैतान रहें हैं | सबसे खूंखार तो सपना मैडम | फिर इनकी छवि मेरे मन में परिवर्तित कैसे हो सकती है? नहीं, ये लोग क्रूर, निर्दयी ही ठीक हैं | मुझे सिल्वर लाईनिंग नहीं चाहिए |

ये किस्सा मैंने सिल्विया को बताया | वो तो मेरी बातें ऐसे सुनती है जैसे कोई गंभीर प्रकृतिवादि किसी नदी की कोई छोटी धारा के किनारे बैठ बहते पानी को, पत्थरों के बीच गुज़रते टकराते हुए, मीठे स्वर में गाते हुए सुनता हो |

सिल्विया सबसे अलग है | मैं तो इसे सब बताता हूँ | मेरा कविता में ज़ीरो होना | और उसी जीरो से छलांग लगाकर गणित में एक धुंधला भविष्य देखना | और इस बीच दशमलव में पारी खेलती कहानी का होना | इनाया से किया प्यार में सेक्स का प्रतिशत अत्यधिक होना | साहिर से व्यापारिक सौदे की बात करना कि रौशनी का दिल तो उसने चुरा लिया है पर समय आने पर फेफड़े मैं ही चुराऊंगा | माँ-पिताजी का मुझे अंडा समझ जहाँ-तहाँ फोड़ देना पर उल्का पिंड गिरने वाले दिन अपना बेटा समझना | रिश्तेदारों की बकवास में आधा ग्राम अर्थ का होना | ये सब सिल्विया को सुनाता जाता हूँ और वो हर बात इत्मीनान से सुनती है | मेरा इस दुनिया पर तमान गुस्सा सिल्विया तक आते आते गायब हो जाता है | मैं इसे

कस के पकड़ लेता हूँ और एक चुम्मी कर देता हूँ | वो मेरे और करीब आ जाती है | मुझे यकीन है कि एक सिल्विया ही है जो मुझे सबसे ज्यादा जानती है |

मैंने इनाया को सिल्विया के बारे में अभी तक नहीं बताया | साहिर को भी नहीं | किसी को नहीं | पर इनाया को कोई दिक्कत नहीं होगी इस बात से | इतना तो चलता है ना | आखिर सिल्विया मेरी डायरी ही तो हो |

7

7.1

एक बिंदु से होकर अनगिनत रेखाएँ गुज़र सकती है | पर अगर एक बिंदु और आ गयी तो ये अनगिनत टूटकर एक बन जाता है | कोई एक ही रेखा होगी जो इन दो बिन्दुओं से होकर गुज़रेगी | अजीब है ना ? एक झटके में सारा गणित ही बदल गया | और अगर अनगिनत बिन्दुओं को एक दूसरे से मिलाया जाए तो अनगिनत रेखाएँ मिलेंगी | अब इन्हें दूर, बहुत दूर से देखा जाए तो फिर से ये एक बिंदु ही लगेगी | कौन कहेगा कि ये एक बिंदु है या अनगिनत |

जब मैं इनाया के कान में ये सब बतियाता हूँ तो वो आँखें बंद कर सुनती और थोड़ी देर बाद मुझे चुप करने के लिए अपने होंठों को गोल कर मेरे होंठों पर एक बिंदु बना देती है | मैं चुप हो जाता हूँ और फिर हम दोनों एक दूसरे के शरीर पर अनगिनत बिंदु बनाते जाते हैं, उन्हें रेखाओं से जोड़ते जाते है | इनाया मेरे जीवन की एक बिंदु है |

7.2

इन गणितज्ञों को शायद कभी कविता से जलन हुई होगी | इन्हें बर्दाश्त नहीं हुआ होगा इसका खुलापन, इसका पागलपन, इसका कुछ भी कह जाना | तो इन्होने कहा कि कल्पना सिर्फ कविता तक सीमित क्यों रहे ? और बना दिया काल्पनिक संख्या | एक कक्षा में सीखा वर्गमूल के अन्दर ऋणात्मक संख्या गलती से भी आ गया तो मर गए, कोई नहीं पता लगा सकता ये किसके बराबर होगा | फिर अगली कक्षा में बताया सब कुछ मुमकिन है बच्चों | ये तो काल्पनिक संख्याएँ हैं | इन्हें असल जीवन में दर्शाना मुश्किल है लेकिन कल्पना में तो कुछ भी हो सकता है |

साहिर कहता है कि मैं गणित को कविता के लेंस से देखता हूँ इसलिए कभी गणितज्ञ की तरह नहीं सोच पाता | रस्ते पर लाने के लिए उसने मुझे हार्डी की एक पतली सी किताब लाकर दी | कहा इसमें गणित है | मैंने पन्ने पलटाकर देखा तो मुझे शब्द ही शब्द नज़र आ रहे थे | ये कैसा गणित है?

और फिर बतियाते हम काकी की दूकान पर पहुँच गए | अपने होंठों के बीच हमने सिगरेट का एक छोर दबा दूसरी तरफ आग का बिंदु जला दिया | काकी ने चाय की दो बिंदु टेबल पर पटक दी | और फिर हम रेखाएँ बनाते रहे | ये साहिर भी एक बिंदु है |

7.3

अगर वास्तविक संख्या में काल्पनिक संख्या जोड़ दें तो ये समिश्र संख्याएँ कहलाती हैं | मतलब काम्प्लेक्स नंबर | असल में देखा जाए तो इसको हिंदी में जटिल संख्याएँ बोलना चाहिए था |

मेरे माता-पिता अगर वास्तविक भाग हैं तो मैं काल्पनिक भाग | और दोनों एक साथ आने पर जटिल हो जाते हैं | ऐसा ही कुछ ये रिश्ता है | ये दोनों भाग अलग हैं पर जोड़ का चिह्न लगा एक साथ रह सकते हैं | लेकिन भूलकर भी जुड़ नहीं सकते |

हिंदी दिवस के लिए पिताजी को एक भाषण तैयार करना था | उनके मन में क्या आया कि उन्होंने मुझसे मदद मांगी | मुझे अच्छा लगा | पर मैंने उनकी कोई मदद नहीं की | ये उनका काम हैं, उन्हें ही लिखना था | बस मैंने इतना कहा जो मन में है कहिये, सीधे, साफ़, सच | भाषण है, दिल निचोड़ने की कोई ज़रुरत नहीं | चाहें तो किसी कविता से भाषण का अंत करिए | पिताजी ठीक है कहकर अपने कमरे में चले गए | अपने बाप को ज्ञान देने में क्या मज़ा है भाई | ये माँ-बाप भी एक बिंदु ही तो हैं |

7.4

बीजगणित में चर संख्याएँ होती हैं | इन्हें हम ज़्यादातर χ मान लिया करते हैं क्योंकि हमें नहीं पता ये कितनी है | ऐसी ही कुछ वो केसरिया कपड़े वाली लड़की थी | काकी है | साहू समोसे वाला हैं | अन्ना आइसक्रीम वाला है | बम्बई चाट वाला है | माँ की मदद करने वाली बाई है | मेरी खिड़की पर अपनी चोंच से टक-टक करने वाली वो दर्जी चिड़िया है | वो आम का मोटा पेड़ है जिसे मैंने गले लगाया था और उसके चारो ओर महुआ के पेड़ जिनसे हाल-फिलहाल जान पहचान हुई है | चीटियाँ जिनका पीछा किया करता हूँ | मकड़ियाँ जो मेरे कमरे में गुणा-भाग होती रहती है | कुत्ते जो कोई आशा लिए मेरी तरफ दौड़ आते हैं | कुछ चेहरे हैं जो देखकर मुस्कुरा दिया करते हैं | ढेर सारे अनजान लोग जिनकी कहानियाँ मैंने छुपकर सुनी है | और ढेर सारे अनजाने जो आगे मिलने वाले हैं | इनमे से किसी के बारे में मैं कुछ नहीं जानता | मेरे लिए ये सब χ हैं | एक बिंदु हैं |

7.5

ये सारे बिंदु कुछ इस तरह हैं कि इन्हें मिलाने पर एक गोल, मेरा मतलब वृत्त बनता है | नहीं, इसका केंद्र मैं नहीं हूँ | मैं तो इस वृत्त के अन्दर भी नहीं |मैं तो कहीं बाहर उड़ रहा हूँ | किसी उपग्रह की तरह इस वृत्त का चक्कर काट रहा हूँ | मेरे आस पास कितने ही छोटे तारे, बड़े तारे हैं जिन्हें मैं पढता रहता हूँ |सिल्विया मेरे साथ ही चक्कर लगाती रहती है और ये ध्यान रखती है कहीं मुझे चक्कर ना आ जाए |

वृत्त का केंद्र बिंदु तो अभी खोजना बाकि है | ये कहाँ है ? अरे यहीं तो मेरा अगला लेख है ना |

---xxx---